## संस्कृति के संरक्षण में आकाशवाणी की भूमिका

(राष्ट्रीय प्रसारण दिवस , 23 जुलाई पर विशेष)

हम सुबह उठते ही रेडियो पर आकाशवाणी की धुन के बाद सुगम संगीत, भजन सुनते है तो लगता है जैसे पूरी प्रकृति जाग गई है। शांत कलरव वातावरण में आकाशवाणी के सुगम संयोग से जीवन के तमाम संघर्ष मानों पल भर के लिए मंद पड़ जाते हैं । जब तुलसी कृत मानस गान के साथ रामचरित मानस कार्यक्रम प्रसारित होता है तो लगता है जैसी समूची संस्कृति की नींद टूट रही है। भारतीय परम्परा में हम सदा ईश्वर को केवल याद नहीं करते बल्कि उसकी भक्ति में लीन होकर अपनी सारी पीड़ाएं उन्हें सौप देते हैं। सर्व शक्तिशाली शक्ति को याद कर ही हम सदा से दिन की शुरुआत करते आए है। आकाशवाणी भी इसी परम्परा का निर्वहन करता आया है। देश दुनिया की खबरें , जो अपनी भाषागत पहचान के साथ सहजता और सरलता से ओतप्रोत होती हैं। इन ख़बरों के संस्कार मानों कई पीढ़ियों तक चले आ रहे हैं। देवकीनंदन पांडे,रामानुज प्रसाद सिंह, रोशन मैनन, लोतिका रतनम, प्रेमपाल सिंह, बारून हालदार, इंदु वाही, राजेंद्र अग्रवाल, राजेन्द्र चुग, कृष्ण कुमार भार्गव और

अशोक वाजपेई सरीखे समाचार वाचकों की आवाज़ सुनते ही लोग के घरो में शांति छा जाती थीं। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक समाचार श्रवण की परंपरा ही केवल व्याप्त न थी बल्कि ये नाम हर घर की पहचान का हिस्सा रहे हैं। शताब्दियां बीतती गई पर यह नाम आज भी अपनी समाचार वाचन कला की पहचान कायम किए हुए हैं। सुंदर सुगम भाषा के जो संस्कार आज भी हमें नज़र आते है , उनमें आकाशवाणी की महती भूमिका हैं , जिसे भुलाया जाना आसान नहीं है।

साहित्य रत्न जुलाई2023

भारत की तमाम भाषाओं से लेकर गीत - संगीत की तमाम पारम्परिक विधाओं का आकाशवाणी से जब प्रसारण होता है तब दूर दराज़ बैठे लोग भावुक हो जाते हैं। श्रेष्ठ भारत की जो छवि इन कार्यक्रमों से आम जन के दिलों में छाई है , उसका कोई सानी नहीं हो सकता। उस्ताद बिस्मिल्लाह खान, पंडित भीमसेन जोशी, रोशनारा बेगम, उस्ताद निसार हुसैन खान, नीनेंदु वेदकुदुरा, खैय्याम, सतीश भाटिया जैसे कलाकारों और प्रसारणकर्मियों ने अखिल भारतीय संगीत को आकाशवाणी के प्रांगण में गुंजायमान किया। देश भर में अपने क्षेत्र विशेष के कलाकारों का आकाशवाणी ने सदा स्वागत किया हैं। यहाँ जिन भी कलाकारों ने संगीत वादन किया , उनमें बहुत से संगीत वाद्य यंत्र ऐसे थे , जिन्हें बजाने वालों की संख्या सीमित रही , उन यंत्रों और कलाकारों को अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से पुनः जीवित किया गया। साथ ही प्रचलित और अप्रचलित सभी पारंपरिक पद्धतियों को समान महत्व दिया गया। इस तरह निर्मित होती संगीत संस्कृति ने जन - जन तक अमिट छाप छोड़ी।

आकाशवाणी के कार्यक्रमों की अपनी एक भाषिक और सास्कृतिक पंरपरा रही हैं , जिसे वह आज भी अपने कार्यक्रमों के माध्यम से संजो रहा है। जिनमें सर्वभाषा कवि सम्मलेन 1956 से आज भी हर वर्ष वृहद स्तर पर आयोजित होता है। यह भाषाओं का अति सुंदर संगम है , जिसमें 25 जनवरी को रात 10 बजे लगभग 400 कवि एक साथ एक मंच यानी रेडियो पर एकजुट होते हैं और रेडियो की इस अद्भुत साहित्यिक परम्परा को आगे बढ़ाते हैं। इसमें भाग लेने वाला कवि राष्ट्रीय कवि का दर्जा पा जाता है । इतना ही नहीं संगीत का अखिल भारतीय कार्यक्रम, डॉ. राजेंद्र प्रसाद स्मारक व्याख्यान, सरदार पटेल व्याख्यान, लोक संगीत, लोक नृत्य, कवि सम्मेलन, नाटक, वार्तालाप आदि

अनेक कार्यक्रम आमंत्रित श्रोताओं के समक्ष आयोजित किये जाते हैं। इन सभी कार्यक्रमों का मूल उद्देश्य भारतीय भाषा, संस्कृति और ज्ञान परम्पराओं को समृद्ध करना है। यह सभी कार्यक्रम भारतीय माटी के बेहद करीब हैं। भारत की तमाम भाषाओं और बोलियों को इसमें बड़े स्नेह से संजोया गया हैं। भारत के शहरों, गांवों, कस्बों से बेहतरीन कलाकारों को खोजकर आकाशवाणी ने कई कार्यक्रमों के माध्यम से कलाकारों को मंच दिया। माटी के रंग कार्यक्रम में देश की तमाम भाषाओं और बोलियों के लोक गीतकार को सुनना सुखद है। तो वही "चिंतन" कार्यक्रम में हमारे महापुरुषों के जीवन और संघर्ष को जानना। "गांधी चर्चा" में बापू के जीवन के उन पक्षों पर बात होती है, जिससे आम जन अनभिज्ञ है . इसी तरह देश के तमाम सामाजिक कार्यकर्ताओं, विद्वानों, राजनीतिज्ञों, अध्यापकों, कलाकारों, खिलाड़ियों आदि के इतिहास को आकशवाणी ने अपने संग्रहालय में संजो कर रखा है। कृषि दर्शन में खेती से जुड़े हर प्रश्न और उनके जवाब सुनना तो मानों आम जन को खेती की जानकारी और समझ दे जाता है। साथ ही हवा महल, आजादी का सफ़र, मंथन, अभ्यास, धरोहर, बापू की बात, संवाद, जानना जरुरी है ? अफ़वाह नहीं सच्चाई जानिए, मनी मैटर्स, संस्कृत वार्ता, सामयिकी और साहित्यिकी कार्यक्रम में साहित्य की तमाम विधाओं, विमर्शों पर बात होती हैं और लेखकों, आलोचकों की आपस में मुलाक़ात होती है फिर लेखकों की रचनाओं, पाठकों से उनको होने वाली शिकायते भी शामिल होती हैं। इस तरह नाटक, रूपक, झलकी, भेंटवार्ता जैसी तमाम विधाओं में निर्मित कार्यक्रमों की बुनियाद में रहे यहां के कुशल प्रसारणकर्मी जिनका नाता साहित्य की गहनतम निधि से रहा है। सुमित्रानंदन पंत से लेकर विष्णु प्रभाकर, इलाचंद जोशी, भगवतीचरण वर्मा, डॉ.हरिवंशराय बच्चन, उपेंद्रनाथ

अश्क, अज्ञेय, भवानी प्रसाद मिश्र, डॉ. नगेंद्र, डॉ. जगदीश चंद्र माथुर, गिरिजा कुमार माथुर, प्रभाकर माचवे, भारत भूषण अग्रवाल, नरेश मेहता, फणीश्वरनाथ रेणु, देवराज दिनेश, कृष्ण चंद्र शर्मा 'भिक्खु' , रमानाथ अवस्थी, पं. विद्यानिवास मिश्र, डॉ. धर्मवीर भारती, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, वीरेंद्र मिश्र, कमलेश्वर, मनोहर श्याम जोशी, आर.के शर्मा उदभ्रांत, अलका पाठक, दुष्यंत कुमार, मुद्राराक्षस, नंद भारद्वाज, गोपाल दास, बालक राम नागर, लीलाधर मंडलोई, लक्ष्मी शंकर वाजपेयी, गंगेश गुंजन, सोमदत्त शर्मा, डॉ. हरी सिंह पाल ,राम अवतार बैरवा आदि ने इस माध्यम को अपना ज्ञान और अनुभव दिया है।

भारत की हर धड़कन से रूबरू करवाती है आकाशवाणी की वार्ता संस्कृति। यह वार्ताएं हमें चिन्तन की तमाम परंपराओं से जोड़ती है । कभी जागरूक करती है तो कभी सजग, कभी हतप्रभ तो कभी निराश कर जाती है। जीवन के आशा और निराशाओं के तमाम पक्ष जब श्रोता सुनते हैं तो वह भी इस वार्ता संस्कृति के इतिहास का अहम् हिस्सा बन जाते हैं। मेलविल डिमोलो, इकराम राजस्थानी, वीर सक्सेना, वीरेन मुंशी, राजीव सक्सेना, उमेश दीक्षित, डॉ कमाल अहमद सिद्दीकी, शिवसागर मिश्र, सत्येन्द्र शरत, राजीव शुक्ला , ऋतु राजपूत, ललिता चतुर्वेदी, मनोज मयंकर और जैनेन्द्र सिंह ने अपनी आवाज़ से भारत की नवीन भाषिक संस्कृति को निर्मित किया है। आज जेनेंद्र सिंह जब कभी जैन धर्म के विज्ञान पर बात करते हैं तो कभी रामसेतु के ऐतिहासिक तथ्यों की बात करते हैं कभी दिव्यांगों, दृष्टिबाधितों की भाषा और संप्रेक्षण पर चर्चा करते हैं तो कभी नामी हस्तियों के संघर्ष से रूबरू करवाते हैं कभी राष्ट्रीय उत्सवों का आंखों देखा हाल सुनाते हैं। जैनेंद्र सिंह सरीखे आकाशवाणी के तमाम प्रस्तोता हमें इसी तरह कभी खुश कभी उत्साहित तो

कभी जीवन के तमाम रंगों से लबरेज करते रहे हैं। वही गीत संगीत के साथ जीवन के तमाम मुद्दों पर बात करते यूनुस खान, मधुमालती, रतन सिंध, बालकराम नागर, अलका पाठक,निर्मला अग्रवाल, आर बी एल माथुर, करूणा श्रीवास्तव, गिरीश चतुर्वेदी, सत्येन्द्र शरत, कमल दत्त, सुदर्शन कुमार, हसन अजीज, अरूण सिंहा, चिरंजीत, डॉ. राजश्री त्रिवेदी, सुजाता रथ, आसकरण शर्मा, मधुकर गंगाधर, गिरीश चतुर्वेदी, कमल शर्मा आदि आज भी संस्कृति के संवाहक के रूप में याद किए जाते है।

भारत के सभी खेल प्रेमी कई शताब्दियों से रेडियो पर खेलों का आँखों देखा सुनते आए हैं। उन पलों को जब भी याद किया जाता है तब जसदेव सिंह का नाम याद आने लगता हैं। जसदेव सिंह ने हिंदी रेडियो कमेंट्री को नई भाषा और नया कलेवर दिया। खेल कमेंटेटर के रूप में उनकी प्रभावमय भाषा का आज भी कोई सानी नहीं है । उनकी कमेंट्री को सुनकर जब मोहल्ले, कस्बों, गांवों, शहरों में लोग एक साथ मिलकर खेल का आनंद लेते थे तो भीतर ही भीतर खेल संस्कृति के आधुनिक अंकुर भी प्रस्फुटित हुए। वही आकाशवाणी से आज जब हर महीने के आखिरी रविवार को हमारे माननीय प्रधानमंत्री 'मन की बात' करते हैं तो मानों हर सांस्कृतिक, सामाजिक पहल आंदोलन का रूप लेकर जन-जन को उत्साह से भर देती है। यह सभी कार्यक्रम आकाशवाणी की धरोहर है।

रेडियों पर आवाज ही आवाज है । बेहतर जिंदगी की और सिर्फ इंसानों की ही नहीं बल्कि हर उस चीज की आवाज जो इस दुनिया में है नदी, सागर, आंधी-तूफान, पशु-पक्षी, और इन सभी आवाजों को पेश करने का नाम है आकाशवाणी। संस्कृति, कलाओं और विचारों का ऐसा अभिलेखागार दुनिया में कहीं नहीं है। लोक जीवन, लोक भाषा और लोक संस्कृति के संरक्षण संवर्धन में इसकी भूमिका का धूमिल

होना आसान नहीं है। यह एक ऐसे

श्रव्य माध्यम से जो एक छोटा सा जादू का बॉक्स जरूर है पर भारतीय संस्कृति को जीवन के करीब लाने का माध्यम हैं।

-कीर्ति बैद

शोध छात्रा (आकाशवाणी)

हिंदी विभाग,

दिल्ली विश्वविद्यालय।